JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लेडीज़ क्लब उपन्यास: जातिगत मनोभाव और सांप्रदायिकता से बदलते सामाजिक समीकरण

बुसरा रहमान

शोधार्थी

हिंदी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़, भारत

शोध सार: नमिता सिंह आधुनिक युग की जागरूक और संवेदनशील लेखिका हैं, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक-धार्मिक जड़ताओं, कुरूपताओं और आधुनिक परिस्थितियों में मानव संघर्ष का प्रभावी चित्रण किया है। भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में धर्मों और जातियों के बीच टकराव की स्थिति लंबे समय से चली आ रही है, और यह समस्या आज भी बनी हुई है। एक ओर, एक ही धर्म के भीतर जातिगत ऊँच-नीच की भावना मौजूद है, तो दूसरी ओर विभिन्न धर्मों के बीच वैमनस्य का माहौल कायम है। नमिता सिंह ने इन घटनाओं के पीछे छिपे राजनीतिक षड्यंत्रों को उजागर करते हुए सांप्रदायिकता के खिलाफ एक सशक्त आवाज़ उठाई है। उनका चर्चित उपन्यास 'लेडीज़ क्लब' सामाजिक विघटन और तनाव के मूल में जातिगत भेदभाव और सांप्रदायिक राजनीति के प्रभावों का गहन चित्रण प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द: साहित्य, समाज, जातीयता, सांप्रदायिकता, भेदभाव, असुरक्षा बोध

मूल आलेख: नमिता सिंह के साहित्य में सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों की अभिव्यक्ति साफ तौर पर दिखायी देती है। विभिन्न जातियों और धर्मों के बीच विद्वेष और इंसानी रिश्तों के विघटन को देखकर नमिता सिंह चिंतित हो उठती हैं। समाज की इन्हीं विडंबनाओ को उन्होंने यथार्थपूर्ण तरीके से चित्रित कर जनता को जागरूक करने का प्रयास किया है। सुरुचि मिश्रा ने नमिता सिंह के साहित्य को परिभाषित करते हुए लिखा है " **नमिता सिंह के साहित्य में उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होती है। समाज से जुड़ी हर छोटी बड़ी समस्या को उनके लेखन में स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है।**"1 नमिता सिंह ने सात कहानी संग्रहों और दो

उपन्यासों की रचना की है। वह साहित्य और शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भूमिका निभा रहीं हैं।

'लेडीज़ क्लब' नमिता सिंह द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से जातिगत भेदभाव एवं सांप्रदायिक राजनीति के कारण सामाजिक संबंधों में आने वाले तनाव एवं विघटन का गहराई से चित्रण किया गया है। उन्होंने सामाजिक संबंधों के टूटने, हिंदू मुस्लिम भाईचारे को शक की भेंट चढ़ने और मानवता के आहत होने आदि कई आयाम रेखांकित किए हैं। नमिता सिंह ने तत्कालीन समय की ऐसी घटनाओं को जो इतिहास के पृष्ठों पर लिखी जाएंगी बहुत ही संवेदनशीलता के साथ यहां प्रस्तुत किया है।

भारतवासियों ने रीति-रिवाज, कर्मकांड एवं जाति-भेदों के बंधन में अपने आप को आज भी बांध रखा है और ये बंधन ही इंसान को इंसान से कोसों दूर ले जाते हैं। नमिता सिंह ने इस संदर्भ में लिखा है **"मैं भूल गई थी कि हमारा हिंदुस्तानी समाज जाती-दर-जाती सैकड़ो खानों में ऐसा बंटा है कि इसकी जड़ें दूर-दूर तक फैल गई हैं। जमीन के नीचे गहरे धंसी ये जड़ें उन बस्तियों और कुनबों तक जा पहुंची हैं, जहां इन विभाजन रेखाओं का अस्तित्व ही नहीं होना चाहिए था।"**2 इन विडंबनाओ को समाज के सम्मुख रखने की भावना ही लेखिका को कलम उठाने के लिए प्रेरित करती है। उपन्यास के शुरुआत में ही लेखिका माइनॉरिटी की स्थिति पर बात करती हैं। आधुनिक भारत में माइनॉरिटी और मेजोरिटी पर अधिक बल दिया जाने लगा है और इनका उत्थान भी आधुनिक समाज की ही देन है। माइनॉरिटी के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए लेखिका कहती हैं **"हमारे अस्सी मेंबरानों में लगभग आठ या दस शिया ख़वातीन हैं। चलो माइनॉरिटी का ख्याल तो रखा किसी ने। शिया माइनॉरिटी ही सही।"**3 विभिन्न राजनीतिक पार्टियां एवं राजनेता केवल सियासत के लिए माइनॉरिटी को याद करते हैं और माइनॉरिटी के बल पर चुनाव जीतते हैं। लेखिका ने यहां पर इस तथ्य को स्पष्ट किया है।

भारतीय समाज की बड़ी विशेषता है कि यहां जितनी बेमिसाल सांस्कृतिक विविधताऐं पायी जाती हैं उतनी ही सामाजिक विषमताऐं भी। डॉ ज्योति वत्स ने इस संदर्भ में लिखा है **"भारतीय समाज में अद्भुत विविधता के दर्शन होते हैं। इसमें अनगिनत जातियां जनजातियां एवं समुदाय समाहित हैं।"**4

एक ही धर्म में पाई जाने वाली विषमता को लेखिका ने अली और हुमैरा के रिश्ते की बात के ज़रिये पेश किया है। अली की अम्मा का कहना **" वे तो सुन्नी हैं बीबी! हम शियों के साथ उनका रिश्ता कैसे होगा?"**5 और अली की बहन सबीहा द्वारा कहा गया ये वाक्य उनके मनोभाव को भी व्यक्त करता है **"भाभी आप कहो तो किसी हिंदू से करा दें हम भैया की शादी, लेकिन खां साहब के घर हम रिश्ता लेकर जाएं तौबा, तौबा, तौबा"**6

जातीय अहंकार के कारण सबसे अधिक प्रभावित वैवाहिक संबंध होते हैं। उच्च जाति का दंभ भरने वाले लोग अन्य जातियों को हीन समझते हैं तथा इसी हीनता बोध के कारण आपस में

रिश्ते भी नहीं हो पाते। ऐसी ही स्थिति का ज़िक्र किया है लेखिका ने अपनी चचेरी बहन शिखा के संबंध में **"पढ़ाई खत्म कर तीन साल से शादी के इंतजार में घर बैठी शिखा की शादी नहीं हो रही है।"**7 चूंकि लड़का तो मिलता है लेकिन ब्रह्मणत्व पिता के समान नहीं मिलता।

उपन्यास के एक और पात्र शर्मा जी को भी अपनी तीन लड़कियों की शादी करनी है और रिश्ते केवल अपनी बिरादरी में ही देखने हैं।

इसी प्रसंग में लेखिका आधुनिक कहे जाने वाले समाज की हकीकत को उद्घाटित करते हुए कहती हैं **"बहुत प्रगतिशील देखे हैं सिद्धांतकार। उपदेशक। बुद्धिजीवी, लेकिन जब व्यवहार का मौका आया तो ताश के पत्तों की तरह भरभराकर ढ़ह गए। घर के अंतःपुर में उस वक्त सिद्धांतों की भाषा बदल जाती। उस समय पत्नी,मां-बाप, खानदान, समाज, संस्कार सब कुछ याद आने लगता है।"**8 परंतु जावेद जैसे कुछ लोग इन मूल्यों को स्थापित कर जाते हैं। जोगेंद्र और शकीला की शादी, शकीला के पिता जावेद अपने सहयोग से करवाकर एक नई मिसाल कायम कर जाते हैं।

आज के आधुनिक समाज में भी सामंतवादी मनोवृत्ति बनी हुई है। छुआछूत का प्रश्न ज्यो का त्यों बना हुआ है। नमिता सिंह ने इन प्रश्नों को यथार्थ रूप से समाज के समक्ष उपस्थित किया है। निम्न जाति का आज भी शोषण हो रहा है, आज भी उन्हें समान मानव अधिकार प्राप्त नहीं है। उपन्यास में रमेश भी उसी वर्ग का पात्र है जो वर्षों से भेदभावपूर्ण नीति का शिकार होते रहें हैं। रमेश,पत्नी के बीमार हो जाने पर कामवाली की तलाश करता है। उपन्यास की वाचिका अपनी कामवाली से काफी आग्रह करती है परंतु वह जवाब नहीं देती, फिर एक दिन वह साफ सवाल उछालती है कि **"तमन्ने ये ना बताई कि कौन जात है वो।"**9 और स्पष्ट तौर पर अपना जवाब सुनाते हुए कहती है **"नाय आंटी। मैं ना कर सकती। मैं गई हती। वो दरोगन के पड़ोस वाला मकान ही तो है। दरोगन कह रही मो ते कि इनके यहां काम करोगी? यह तो चमार हते...।"**10 वाचिका के घर आई हुई रमा भी नूरजहां के संबंध में सवाल करती है **"क्यों री,और कोई कामवाली नहीं मिली थी तुम्हें?"**11

निरंतर अपमान और तिरस्कार झेलते आ रहे इन पात्रों के माध्यम से समाज की विद्रूपताओं को प्रकट किया गया है। इस जाति-व्यवस्था के कारण समाज का रूप ही विकृत हो गया है। ऊंच-नीच की भावना ज़हनियत में इस कदर सवार है कि इंसान सिर्फ जाति पर बल देता है, इंसान का व्यक्तित्व तो यहां बौना साबित होता है।

जाति व्यवस्था का प्रकोप इतना बढ़ गया है कि इंसान अपनी जड़ों को छोड़कर ऊंची कहे जाने वाली जाति में प्रवेश करना चाहता है। ऐसा ही प्रकरण उपन्यास में सामने आया है जब असजद अपनी बेटी का रिश्ता करना चाहता है। लड़के के परिवार वालों के नाम के साथ तो शेख लगा होता है परंतु खोजबीन करने पर पता चलता है कि वह भदोही के गांव लघनिया के जुलाहें हैं।

वर्तमान काल भी जाति की जकड़नों में इतना बंधा है कि एकीकृत होने की कोई राह नहीं मिल पा रही है। समाज की इस स्थिति का अंदाज़ा निम्न पंक्तियों के माध्यम से लगाया जा सकता है **“आदमी धर्म बदल लें, लेकिन जाति नहीं बदल सकता।”**12

विडंबना यह है कि सुशिक्षित युवक भी इस मनोवृति के प्रभाव से नहीं बच पाते हैं। कुलसुम और अफ़ज़ाल इस उपन्यास के ऐसे ही पढ़े लिखे पात्र हैं, दानों की पढ़ाई-लिखाई और विचारों का स्तर समान है परंतु जातीय असमानता के कारण उनकी शादी नहीं हो पाती है।

साहित्यकार समाज का यथार्थ दृष्टा होता है। उसकी संवेदनाएं समाज से ही जुड़ी होती हैं अतः वह सामाज से विच्छिन्न होकर नहीं रह सकता। सामाजिक जीवन के हिंसात्मक रूप को देखकर वह विचलित हो उठता है तथा इस सत्य को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

“वर्तमान में धार्मिक संकीर्णता अपने शिखर पर है... उपन्यासकारों ने भी विगत कुछ वर्षों में हुई धार्मिक विघटनकारी परिस्थितियों का अनुभव करके ही उसे लेखनबद्ध किया है।”13 प्रस्तुत उपन्यास में सांप्रदायिकता की त्रासदी का बहुत ही हृदयविदायक चित्रण हुआ है। सांप्रदायिक विद्वेष की आंधी में मानवीय रिश्ते किस तरह मिट जाते हैं और इंसान हैवान बन जाता है का सजीव चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। समाज में घटित होने वाली तमाम सांप्रदायिक एवं राजनीतिक घटनाएं जो सामाजिक जीवन को प्रभावित कर एक परिवर्तित रूप देती हैं,आदि का सूक्ष्म विश्लेषण नमिता सिंह ने किया है। इस संदर्भ में ज्योति वत्स का यह कथन सार्थक प्रतीत होता है **“वर्तमान भारत में सबसे बड़ी समस्या देश की उन्नति में रुकावट उत्पन्न कर रही है वह है सांप्रदायिकता। वर्तमान समय में धर्म का स्वरूप धूमिल करने में सांप्रदायिकता की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।”**14

सांप्रदायिकता से उपजी विस्थापन की पीड़ा को भी नमिता सिंह ने गंभीरता से अंकित किया है। कैंपस में मुसलमान और हिंदू सभी मिलजुल कर रहते और एक दूसरे के सुख-दुख के साथी थे परंतु **“दिसंबर 1992 के सर्द दिनों में जब शहर दंगों की लपटों में झुलस रहा था, उस भीषण समय में लीला गुप्ता और डॉ. गुप्ता कैंपस छोड़कर अपने नए मकान में चले गए।”**15 डॉक्टर जमाल और शाहिदा के इसरार करने पर भी वहां नहीं रुकें। सांप्रदायिकता के नाम पर हो रहे झगड़ों के कारण ऐसा माहौल बन गया कि हमेशा साथ में रहने वाले लोगों को भी अपना घर छोड़ने पर विवश होना पड़ा। एक दूसरे पर से कैसे विश्वास उठ गया इसका यथार्थ वर्णन लेखिका ने किया है। शाहीदा जमाल उनके जाने के बाद बहुत रोई और यही कहती रही **“लीला ने हम लोगों पर भरोसा नहीं किया लीला ने रुसवा किया हमें।”**16 सांप्रदायिकता की आग वातावरण को कितना विस्फोटक कर देती है,लेकिन वास्तव में तो यह आग राजनीतिक-आर्थिक स्वार्थों की भरपाई के लिए होती है, जिसके कारण सांस्कृतिक एकता भंग हो जाती है। **“जिस देश-काल में**

धर्म के नाम पर जितने आडंबर एवं पाखंड वर्तमान है,वह देश और उसका जन-समाज उतना ही पिछड़ा हुआ है।"17

सांप्रदायिकता के ज़हर के कारण समय-समय पर होने वाले दंगे वातावरण में कड़वाहट घोलते हैं। लेखिका ने ऐसे ही वातावरण के बारे में उपन्यास में लिखा है **"ज़मीन से आसमान तक छा रहा कालापन कुछेक महीनों से सुलग रहा था। चुनावी सियासत गरमा रही थी। मंदिर के शिखर और घंटे तथा मस्जिद की मीनारें और अजान अलग-अलग पालों में सजे हुए थे।"**18

ऐसे दंगों की भेंट न जाने कितने मासूम चढ़ते हैं। शहर में हुए दंगे के बाद की स्थिति का वर्णन लेखिका ने कुछ इस तरह किया है **"चलो,अबकी बार तीन-सिर्फ तीन में ही मामला निबट गया। वरना इस शहर की सड़के,गलियां और कूचे खून के प्यासे हो जाते हैं, आसानी से प्यास नहीं बुझती इनकी।"**19

सांप्रदायिकता जैसी मनोवृत्ति ने हिंदुस्तान की गंगा जमुनी तहज़ीब को हमेशा धुंधलाने की कोशिश की, खासतौर से अल्पसंख्यक समुदाय के भीतर डर की भावना को उत्पन्न किया। असंतोष की भावना से ग्रसित मानसिकता का परिचय मिलता है मिसेज अहसन और परवीन के बीच हुए संवाद से। जब मिसेज अहसन कहती है **"मैंने तो अपने दोनों बेटों से कह दिया है कि जुमे को जोहर की नमाज़ घर पर ही अता करो,यहां तो बहाना चाहिए लोगों को।"**20 राजनेता, स्वार्थ भाव के लिए सांप्रदायिकता का सहारा लेते हैं। उपन्यास में अध्यक्ष पद के दावेदार के माध्यम से लेखिका ने इस सच्चाई को बड़े जीवंत तरीके से पेश किया है।

सांप्रदायिकता का यह विद्वेष भाई को भाई से अलग कर देता है। असगर और अकमल दोनों भाइयों की राहें जुदा हो जाती है क्योंकि एक मुस्लिमलीगी हो गया था और दूसरा गांधी के स्वदेशी आंदोलन में ही शामिल रहा।

भारत के इतिहास में विभाजन की क्रूर घटना ऐसी है कि आज भी जनता को उसका दंश झेलना पड़ रहा है। अभी भी जब सांप्रदायिकता फैलती है तो निर्दोष लोगों को उसी नफरत का सामना करना पड़ता है। बस के द्वारा मेरठ से अलीगढ़ तक के सफर में डॉक्टर मेराज को ऐसी ही भयानक स्थिति का सामना करना पड़ता है। मेराज को दाढ़ी वाला पाकर नौजवान सवाल उछालता है **"ए दाढ़ी वाला, हिंदुस्तानी या पाकिस्तानी।"**21

बाबरी मस्जिद प्रकरण एवं तात्कालिक स्थिति का भी बहुत ही सजीव चित्रण उपन्यास में हुआ है।नमिता सिंह ने सांप्रदायिकता के मूल कारणों तथा उत्तरदायी तत्वों की ओर ध्यान आकृष्ट कराने की कोशिश की है तथा ऐसी मान्यताओं का विरोध जताया है।

ये तमाम सांप्रदायिक घटनाएं ऐसी हैं जिनका सामाजिक संबंधों पर गहरा असर पड़ता है। आपसी रिश्ते किस प्रकार खोखले पड जाते हैं इसका उदाहरण राधा बेन के प्रति कमर और ज़फर का बदला हुआ व्यवहार है।

"सांप्रदायिकता के कारण भारत की सामाजिक और आर्थिक दशा पर प्रतिकूल असर पड़ा है। भारत की अर्थव्यवस्था को जिस रफ़्तार से पनपना चाहिए था वह पनपी नहीं और इससे बेरोजगारी और असमानता बढ़ी। नतीजा सामाजिक हताशा और बेचैनी में निकला।"22 विभिन्न धर्मों,समुदायों और संस्कृतियों के मेल से ही समाज का निर्माण होता है। परंतु जब समाज में रूढ़ियां,राजनीतिक विसंगतियां और भेदभाव व्याप्त हो जाते हैं तो समाज बुरी तरह दुष्प्रभावित हो जाता है।

सांप्रदायिक विद्वेष को बढ़ावा देने में आज मीडिया की अहम भूमिका है। जब मीडियाकर्मी सत्ता की गुलामगिरि करने लगते हैं तो समाज में नकारात्मकता फैलती है। विवेच्य उपन्यास में मीडिया द्वारा फैलाई गई सांप्रदायिक अफवाहों का वर्णन मेडिकल कॉलेज के संदर्भ में किया गया है। **"कॉलेज के पिछवाड़े दलदल है। भयानक दलदल। वहां दफ्न हो रहीं हैं ज़िंदगियां।"**23 यह अफवाह अखबारों और अखबारों में खबर देने वालों के द्वारा फैलाई जाती है। यें अफवाहें ही गंभीर घटनाओं का रूप धारण कर लेती हैं और संप्रदायों को हिंसा की आग में धकेल देती हैं,फिर आगे का रास्ता इंसान को दिखाई नहीं देता।

निष्कर्ष: नमिता सिंह ने जातीय विषमता और सांप्रदायिक विद्वेष से उत्पन्न बदलाव को यथार्थ दृष्टि से देखा और चित्रित किया है। विशेष रूप से जातीय समस्या के सामने प्रश्न खड़ा किया है। लेखिका इस बात पर बल देते हुए दिखाई देती हैं कि जब तक लोग अपने आप को ताकतवर तथा दूसरे को कमतर समझते रहेंगे तब तक समाज का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। नमिता सिंह ने सचेत लेखिका का परिचय देते हुए सांप्रदायिकता जैसे संवेदनशील विषय को उपन्यास में बखूबी चित्रित किया है तथा सांप्रदायिकता के कारणों की तलाश कर समाज के सम्मुख रख दिया है ताकि मनुष्य ऐसी घटनाओं से सीख सके और समाज में शांति और भाईचारा कायम हो सके।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ सुरुचि मिश्रा, नमिता सिंह का रचना-संसार, शब्दसृष्टि प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 2014, पृ. 102

2 नमिता सिंह, लेडीज़ क्लब, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022, पृ. 17

3 वही, पृ. 9

4 डॉ. ज्योति वत्स, हिन्दी उपन्यास सांस्कृतिक परिदृश्य, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2012, पृ. 87

5 नमिता सिंह, लेडीज़ क्लब, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022, पृ. 16

6 वही, पृ. 16

7 वही, पृ. 17

8 वही, पृ. 12

9 वही, पृ. 37

10 वही, पृ. 38

11 वही, पृ. 38

12 वही, पृ. 67

13 डॉ ज्योति वत्स, हिन्दी उपन्यास सांस्कृतिक परिदृश्य, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2012, पृ. 239

14 वही, पृ. 235

15 नमिता सिंह, लेडीज़ क्लब, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022, पृ. 31

16 वही, पृ. 33

17 डॉ. अमरसिंह जगराम लोधा, प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, अमर प्रकाशन, अहमदाबाद, सं. 1985, पृ. 5

18 नमिता सिंह, लेडीज़ क्लब, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022, , पृ. 41

19 वही, पृ. 42

20 वही, पृ. 42

21 वही, पृ. 130

22 डॉ अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली,क् राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022, पृ. 369

23 नमिता सिंह, लेडीज़ क्लब, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022, पृ. 147